अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय - जमींदारी प्रथा की पृष्ठभूमि **1-16**

1.1 जमींदारी प्रथा का आरंभ

1.2 जमींदारी प्रथा का विकास

1.3 जमींदारी प्रथा का उन्मूलन

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय - आलोच्य उपन्यासों की कथावस्तु का अनुशीलन **17-80**

2.1 शिवप्रसाद सिंह - अलग अलग वैतरणी - 1967

2.2 जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना - 1972

2.3 विद्यावाचस्पति - जमींदार - 1979

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय - आलोच्य उपन्यासों में चित्रित जमींदारों की प्रवृत्ति के विविध पहलुओं का चित्रण **81-101**

3.1 मारपीट की प्रवृत्ति

3.2 इर्ष्या की प्रवृत्ति

3.3 अत्याचारी प्रवृत्ति

3.4 षड्यंत्रकारी प्रवृत्ति

3.5 स्वार्थी एवं आत्मकेंद्रितता की प्रवृत्ति

3.6 डरा-धमकाने की प्रवृत्ति

3.7 झूठे इल्जाम लगाने की प्रवृत्ति

3.8 जोर जबरदस्ती करने की प्रवृत्ति

3.9 वासनांध प्रवृत्ति

3.10 ढोंगी प्रवृत्ति

3.11 चोरी करने की प्रवृत्ति

3.12 चुनाव से लाभ उठाने की प्रवृत्ति

3.13 लगान वसूल करने की प्रवृत्ति

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय - जमींदारी प्रवृत्ति के परिणामस्वरुप निर्मित समस्याओं का चित्रण **102 -118**

4.1 शोषण की समस्या

4.2 जातीय भेदाभेद की समस्या

4.3 जनआंदोलन की समस्या

4.4 लगान वसूलने या कुर्की चढाने की समस्या

4.5 कर्ज उतारने की समस्या

4.6 गरीबी की समस्या

4.7 बलात्कार की समस्या

4.8 आत्महत्या की समस्या

4.9 जनआंदोलन की समस्या

4.10 विकृत यौन चेतना की समस्या

निष्कर्ष

पंचम अध्याय - जमींदार वर्ग का चित्रण करनेवाले अन्य साठोत्तरी उपन्यासों का आशयात्मक परिशीलन **119-145**

5.1 रागदरश मिश्र - पानी के प्राचारी - 1961

5.2 रागदरश मिश्र - आकाश की छत - 1979

5.3 श्रीमति अग्निहोत्री - नयी बिसात - 1980

निष्कर्ष

उपसंहार **146-157**

संदर्भ ग्रंथ सूची **158-160**